बदलाव

डॉ. विकास श्रीवास्तव

डॉक्टर और मरीज़ का रिश्ता सदियों पुराना है, चोली-दामन का साथ है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। एक को दूसरा न मिले तो बेचैन हो उठते हैं। फुर्सत में बैठे डॉक्टर को यदि मरीज़ मिल जाए, या बीमारी से ग्रसित को समय पर डॉक्टर उपलब्ध हो जाए तो दोनों भावविभोर हो उठते हैं। तन-मन से एक-दूसरे को अपना सबसे बड़ा हितैषी सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। वहीं सिक्के के दूसरे पहलू में व्यस्त, पेट भरे डॉक्टर अथवा ठीक होते मरीज़ के बीच की संवाद स्थिति ही दूसरी है- ऐसी ही परिस्थितियों में सिक्के के एक पहलू से दूसरे पहलू की ओर आते हुये का दृश्य किसी से छिपा नहीं है। गंभीर मरीज़ के गंभीर बीमारी से निरोगावस्था तक पहुँचते हुये प्रथम कुछ दिनों के अंश में बहुरूपता दृष्टिगोचर है।

प्रथम दिवस :-

जैसे ही डॉक्टर गंभीर मरीज़ के पास पहुँचता है- मरीज़ और उसके रिश्तेदार डॉक्टर में भगवान के दर्शन करते हुये, उसके चरणों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। ''डॉक्टर साहब, आप तो भगवान हो, अब तो आप ही का आसरा है, बस हम तो आपकी शरण में हैं। अब आप ही के हाथ में है, जो भी करो, बस बचा लो।''

डॉक्टर भी भगवान जैसे दर्शन देते हुये संवाद करता है, परिस्थितियों और जिम्मेदारियों से बचने का प्रयास करता है - 'भाई, अपनी तरफ से तो कोई कसर नहीं छोड़ रखी है। बाकी सब ईश्वर के हाथ में है। उस पर भरोसा रखो उसकी कृपा से सब ठीक होगा।'

द्वितीय दिवस :-

लाभ की ओर अग्रसर होते ही, मरीज़ की नज़र में डॉक्टर भगवान से उतरकर माँ-बाप की श्रेणी में पहुँच जाता है।

''डॉक्टर साहब आप तो माई बाप हो, आप ही का बच्चा है। ख्याल रखना। जो खर्चा लगे सो बताना, खर्चे की परवाह नहीं करना। जैसे भी होगा, ज़मीन-जायदाद बेंच कर इंतज़ाम

करेंगे।''

डॉक्टर को अभी भी स्वस्थता की प्रमाणिकता पर संदेह है। अत: वह माँ-बाप बना रह कर सेवा करने में ही भलाई समझता है।

तृतीय दिवस :-

मरीज़ काफी स्वस्थ हो चला है और उसे अपने आसपास की स्थिति का आभास होने लगता है। अत: सबसे पहले तो उसे यह आभास होता है कि डॉक्टर आज बड़ी देर से आया है। और हकीकत में वह 'माँ-बाप' न होकर मात्र डॉक्टर साहब भर हैं। ''आज बड़ी देर लग गई डॉक्टर साहब, कहीं रुक गये थे क्या? यह जाँच के लिये कल आप पर्चा दे गये थे, साहब पता लगाया था यह तो बहुत महँगी है। दवाईयाँ भी बहुत महँगी चल रही हैं। 20-25 हज़ार तो छोटे की बीमारी में पहले ही उठ गये। पैसे की तंगी चल रही है साहब।''

डॉक्टर भी कुछ कुढ़ सा गया- अब ठीक होने लगे, और लेन-देन का समय आया तो खर्चा दिखने लगा, कल तक जमीन-जायदाद बेचने को तैयार थे। फिर भी वह पैंतरे नहीं बदलता- अपना कमीशन तो लेकर ही रहूँगा।

नहीं भाई, यह जाँच तो बहुत ज़रूरी है, तभी तो पता चलेगा कि आगे क्या दवा चलनी है और सुनो कहीं इधर-उधर से मत कराना। इस दुकान पर चले जाओ, हमारा पर्चा ले जाना, नाम बता देना और बता देना की डॉक्टर साहब ने भेजा है- अच्छे से जाँच हो जायेगी, तो इलाज अच्छा होगा।

चतुर्थ दिवस :-

जागरुकता और सजगता और बढ़ गई है। दोनों ही इस प्रयास में हैं कि कहीं कोई किसी को चूना न लगा दे। कोई ज्यादा न खींच ले और कहीं वो अँगूठा दिखाकर ही न चला जाये। अत: शिकायती फाईल खोली जाये, ताकि सामने वाला दब जाये।

''डॉक्टर साहब आपकी ये जो नर्स है ना वो इंजेक्शन ढंग से नहीं लगाती है, कल से दर्द कर रहा है और साहब लगता है दवा कुछ रियेक्शन सा कर रही है, कल रात भर नींद नहीं आई, गंदगी बहुत है साहब यहाँ।''

अब पैसे देने का समय आया तो नींद क्यों आयेगी। अच्छा हो चला है तो अब मेरी नर्स ही खराब दिखाई देने लगी। ''भाई ऐसा है कि अब तुम अच्छे हो चले हो, अब छुट्टी का पर्चा बना देते हैं, शाम को घर आकर दवाई दिखाकर समझ लेना और कुछ तकलीफ हो तो वहीं बता देना।''

''दवा दिखाना तो बहाना है, लगता है कम्बख्त बिना पैसे लिये नहीं मानेगा।''

पंचम दिवस :-

डिस्चार्ज टिकट बन चुका है। घर पर फीस भी पहुँचा दी गई है। स्वास्थ्य लाभ भी है। अत: भगवान से माँ-बाप और फिर साहब बना डॉक्टर, अब यार बन गया है।

''यार डॉक्टर साहब आज जल्दी आ गये? ड्यूटी है क्या। कुछ भी कहो आपका इलाज बहुत अच्छा है (क्या पता कब काम पड़ जाये)। बस दवा थोड़ी महँगी लिखते हो। कल शाम एक मरीज़ भेजेंगे आप के घर, अच्छा मैं खुद ही ले आऊँगा।

(जैसे इन्हीं का दिया खा रहे हों)

(तो और किसके दिये से पनप रहे हो)

कल मरीज़ लेकर आयेंगे और अपना परामर्श फोकट में कराने की कोशिश करेंगे।

षष्टम दिवस :-

शाम को डॉक्टर के घर फोन पर- यार डॉक्टर साहब, बड़ी मुश्किल से आप मिले हो फोन पर - दोपहर फोन किया था, बच्चे ने बताया कि डॉक्टर साहब सो रहे हैं। भाई आप लोगों की बढ़िया ड्यूटी है, सुबह-शाम नोट गिनें, दोपहर में आराम से सोयें, अपनी किस्मत में कहाँ है ऐसा सोना। अच्छा फोन इसलिये किया था कि कल शाम को जिस दोस्त को आपको दिखाया था उसे आराम नहीं है। लगता है इस बार आपकी दवा सूट नहीं की। ●●●